अभियान

बदलाव के लिए अगुवाई

सरिता बलोनी

परिचय

जागोरी, पिछले 6 से सालों से बवाना और खादर बस्ती में समुदाय की महिलाओं, युवाओं व बच्चों के साथ उनके अधिकारों पर काम कर रही है। 2004 से हमारे जुड़ाव के दौरान हमने महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा के खिलाफ़, युवा लड़के एवं लड़कियों के अधिकार के मुद्दों, बुनियादी नागरिक हक़ों जैसे राशन कार्ड व भोजन के अधिकार, शिक्षा एवं अन्य बुनियादी ज़रूरतों तक पहुंच बनाने पर काम किया है। अपने काम के दौरान बवाना और खादर में कई ऐसी महिलाओं से मुलाकात रिश्तों में बदल गई हैं। किन-किन महिलाओं का नाम लूं? समझ से परे है। परन्तु इनमें कुछ के साथ में व्यक्तिगत रूप से बात कर पाई हूं। ये चार महिलाएं एकल हैं। कोई पति के साथ रहते हुए अकेली है तो कोई पति के देहांत के बाद अकेली है। परन्तु ज़िम्मेदारी निभाने में कोई भी उन्नीस नहीं है। सभी बीस के बराबर काम करती हैं और अपनी जीवन नैया पार लगाने में लगी हैं। असल जिंदगी में चारों ही विस्थापन की मारी हैं और अधिकारों तक पहुंच बनाने में हाथापाई कर रही हैं। बवाना में 14 ब्लॉक है जिसमें 12 ब्लॉक में रिहाईश है। लगभग सवा लाख आबादी की आधी आवाम महिलाओं की है। ये बातें सिर्फ़ उन सभी हाशिये पर रहने वाली महिलाओं की बातें हैं जिनकी आवाज़ें घर से बाहर भी नहीं पहुंच पाती हैं। हालांकि आज जगह-जगह नारी सशक्तिकरण की बात चल रही है। कहीं ना कहीं सरकार भी कई योजनाएं ला रही है। परन्तु योजना सिर्फ़ कागज़ तक ही सीमित रही है।

हम सबला के माध्यम से इन महिलाओं का परिचय आपके साथ करा रही हूं। हमने इनके साथ पानी व स्वच्छता से जुड़ी समस्याओं व उनके हल के बारे में बातचीत की।

मुश्तर

मुश्तर तीन बेटियों की मां है और सन् 2004 में यमुना पुश्ता से विस्थापित होकर बवाना जेजे कॉलोनी में रह रही है। यह 55 वर्षीय एकल मुस्लिम महिला बकरकसाब पठान जाति से संबंध रखती हैं। करीब चार-पांच साल पहले पति के देहांत के उपरांत तीनों बेटियों की पालन पोषण की ज़िम्मेदारी वह बखूबी निभा रही है। मुश्तर घर-घर जाकर मीट और सब्ज़ी बेचने का काम करती है। सुबह चार बजे के आस-पास हफ्ते में तीन चार दिन सब्ज़ी और मीट खरीदने के लिए पुरानी दिल्ली जाती है। इन पानी, नाली, कूड़ा निपादन और शौचालय तक पहुंच के संदर्भ में सुरक्षा से जुड़े मुद्दे पर मुश्तर से बातचीत के दौरान निम्न बातें सामने आईं। मुश्तर ने बताया कि लड़के छेड़छाड़ करते हैं। अंधेरे में छेड़े जाने पर पहचान नहीं हो पाती है और लड़कियों के साथ हिंसा की संभावना बढ़ जाती है। लड़के इस बात का फायदा बखूबी उठाते हैं। कभी वो कोहनी मारकर निकल जाते हैं तो कभी छाती में हाथ मारकर धक्का देते हैं। मुश्तर ने बताया कि जिन महिलाओं को आर्थिक तंगी होती है वो महिलाएं और लड़कियां ज़्यादातर दिन हो या रात खुले में शौच के लिए जाती हैं जिससे असुविधा होती है। जब लड़कियां शौच के लिए बाहर एक खुले मैदान पर जाती हैं तो उनके पीछे-पीछे लड़के भी चले जाते

नफ़ीसा (सफ़ेद सूट/पीला दुपट्टा), मुश्तर (सफ़ेद सूट), सत्यभामा (साड़ी पहने हुए दाहिने कोने में) महिला मीटिंग के दौरान।

फ़ोटो: सरिता बलोनी

हैं। ऐसे में वो कुछ करे या न करे पर लड़कियों पर एक मानसिक दबाव बन जाता है कि कहीं कुछ हो ना जाए। मुश्तर मानती हैं कि लड़कियों और महिलाओं के साथ छेड़खानी बवाना में आम बात हो गई है। डर की वजह से कई बार शौच को रोकना पड़ता है। इज़्ज़त सबको प्यारी है, कई बार औरतें और लड़कियां कागज और अख़बार, थैली में शौच निव्रत होती हैं और समय देखकर कूड़े में फेंक देती हैं। बिजली चले जाने पर पानी नहीं मिल पाता है। शौचालय में नहाते समय कई बार बिजली चली जाती है तो कई बार महिलाओं को साबुन लगे शरीर में नग्न अवस्था में ही रहना पड़ता है। जिसके पास पैसा होता है वो पानी जेनरेटर के द्वारा चलवा लेता है। मुश्तर के घर में निजी स्नानागार रूपी ढांचा है जिसे मूत्रालय के तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता है। मुश्तर को लगता है कि *"लड़कियों की अपेक्षा बुजुर्ग महिलाओं के साथ हिंसा होने की संभावना कम है।"*

नफीसा

नफीसा की उम्र 59-60 वर्ष है और वह सैफी जाति की है। पति का देहांत 20 साल पहले हो गया था। एक बेटी आठवीं में पढ़ रही है और दूसरी बेटी ने आठवीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी है। पिछले आठ महीने पहले तक नफीसा अपने छोटे बेटे और बहू के घर में रह रही थी। अब उसका अपना घर बन गया है जहां नफीसा अपनी दो कुंवारी बेटियों के साथ रह रही है। नफीसा का कहना था कि बिजली चली जाने के कारण पानी नहीं मिलता। पानी के लिए काफी लम्बी लाईन लगी होती है इसलिए काफी समय पानी भरने में ही गुज़र जाता है। पानी आने पर लाईन में नंबर लगाना पड़ता है। जो औरत तेज़ होती है वो पहले पानी भर लेती है जो सीधी होती है वो बाद में पानी भरती है। अगर सरकारी नल ज़्यादा हो जाएं तो शायद लड़ाई ना हो और लोगों का समय भी बचे। पानी कच्चा है और महक आती है जिसके कारण अक्सर पेट ख़राब रहता है। सुबह पांच बजे तक शौचालय नहीं खुलता है। बहुत लंबी कतार होती है और अगर बिजली चली जाए तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता है। कई बार पेट में दर्द होने पर बार-बार शौच के लिए जाना होता है। पहले खुले में शौच जाने के लिए काफी जगह थी परन्तु अब ये जगह या तो अनाधिकृत झुग्गियों ने ले ली है या फिर वहां निर्माण का काम चल रहा है। कई बार औरतों के शौचालयों में बिजली ना रहने पर पानी बंद हो जाता है तो पुरुषों वाली साईड से पानी लाना पड़ जाता है। उस समय डर लगता है। शौचालयवाला वहां से पानी लाकर नहीं देता है। घर के पास वाली नालियां लोग खुद साफ़ करते हैं पर पानी फिर वापिस आ जाता है। बारिशों में नाली का पानी बाहर बहता है। नफीसा का कहना है कि चूंकि *"औरत का काम सफ़ाई का है इसलिए सफ़ाई कर्मचारी भी औरतें हों तो फ़र्क़ पड़ सकता है। इसलिए उनका दफ़्तरों में होना ज़रूरी है।"*

इंदिरा देवी

साठ वर्ष की इंदिरा देवी नारायणा से विस्थापित होकर पिछले तीन चार सालों से बवाना जे जे कालोनी में रह रही हैं। इंदिरा के दोनों बेटों और एक बेटी की शादी हो गई है। पति मानसिक रूप से बीमार हैं व पिछले एक साल से लापता हैं। इंदिरा फैक्टरी में काम कर अपना गुज़र-बसर कर रही है। हमारे पूछने पर कि उसे पानी क्यों नहीं मिलता है इंदिरा देवी का कहना था कि जब बिजली नहीं होगी तो पानी कहां से मिलेगा। पानी मोटर से चलता है इसलिए बिजली का सबसे ज़्यादा असर पानी पर पड़ता है। सरकारी नल का पानी खारा व कच्चा है। अगर पानी या शौचालय के लिए जाना हो तो महिलाओं की स्थिति खराब है। अंधेरे में सर्दियों में अकेले निकलना मुश्किल होता है। पानी भरना भी ज़रूरी होता है क्योंकि उसके बाद फैक्टरी के लिए निकलना होता है। सरकारी नलों पर बहुत झगड़ा होता रहता है। एक रुपया देने के बाद भी शौचालय गंदा रहता है।

शौचालय का पानी नहाने योग्य नहीं है। कूड़े की गंदगी और बरसात में पानी भर जाने के कारण मच्छर पैदा होते हैं जिसकी वजह से बुखार हो जाता है। सफ़ेद पानी व पेशाब में जलन होती है। कूड़ा फेंकने के लिए लोग पार्क में जाते हैं। इंदिरा देवी का मानना है कि *"कूड़ा डालने के लिए कूड़ेदान होने से फायदा होगा। राशन कार्ड भी अभी तक नहीं बने है व इलेक्शन कार्ड के*

फ़ोटो: सरिता बलोनी

माइक पर बोलती हुई इंदिरा

लिए फार्म भर दिए हैं परन्तु इसके बनने के बारे में कोई जानकारी नहीं है।"

सत्यमाभा

एकल बुजुर्ग महिला सत्यभामा यमुना पुश्ता से विस्थापित होकर बवाना जे जे कालोनी में पिछले पांच-छः सालों से रह रही हैं। वह एक बेटे के साथ रहती हैं। बवाना की समस्याओं पर बातचीत करने पर सत्यभामा ने बताया कि बिजली जाने के बाद पानी नहीं मिलता। पानी भरने दूसरे इलाके में जाना पड़ता है। पानी को लेकर झगड़ा होता रहता है। कई औरतें नलों की टूटियां तोड़कर अपने घर ले जाती हैं। तब सब मिलकर अपने पल्ले से पैसा लगाकर नल ठीक करवाते हैं। मोटर का पानी पीने व नहाने के लिए ठीक है। जब लड़ाई बढ़ जाती है तो थाना पुलिस हो जाती है। गंदगी के कारण मच्छर फैलते हैं। यहां पर सफ़ाई वाले भी नहीं आते हैं। सब्ज़ी बाज़ार में गंदगी रहती है। जब हवा चलती है तो कूड़ा इधर-उधर हो जाता है और इस वजह से गंदगी होती है। शौचालय रात के ग्यारह बजे बंद होता है और सुबह चार बजे खुलता है। कई लोगों ने अपने शौचालय बना लिये हैं जो अपने परिवार के लिए इस्तेमाल करते हैं। गंदे शौचालय की वजह से लोग शौचालय इस्तेमाल करना नहीं चाहते और खुले मैदानों में जाते हैं। परन्तु अब बाय पास वाली सड़क पक्की हो गई है। गाड़ियां चलने लगी है जिसके कारण दोपहर व रात में बाहर नहीं जा सकते। शर्म आती है और डर भी लगता है। सत्यभामा के अनुसार *"अगर सभी लोग सफ़ाई रखने का मन बना लें तो गंदगी नहीं रहेगी। इस इलाके में एक बगीचा भी हो तो अच्छा रहेगा। बिजली चली जाने पर हम वहां आराम से बैठ सकेंगे।"*

औरतों की बातों से ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार की बेरूखी के कारण सार्वजनिक सुविधाएं लगभग नगण्य हैं। पर ऐसा भी नहीं है कि महिलाएं हाथ पर हाथ धरे बैठी हैं। अपने स्तर पर अपनी इस लड़ाई को सभी ने जारी रखा हुआ है। महिलाएं इस जद्दोज़ेहद में लगी हैं कि कैसे अपने अधिकारों को ले पाएं। महिलाओं ने हिंसा व खाने के अधिकार से पहचाना, समझा और समझाया कि कैसे जल सफ़ाई और स्वच्छता का अभाव तथा आधारभूत सुविधाओं की कमी जीवन में एक असुरक्षा पैदा करती है। नालियों का खराब डिज़ाइन, अनियमित देखरेख और पानी के बाहर बिखरने, गीले कूड़े व मिट्टी के सड़क पर फैले रहने, बिजली की कमी जैसी कुछ मूलभूत ज़रूरतें महिलाओं की सुरक्षा व गरिमा पर असर डालने वाला गहन मुद्दा है। कुछ महिलाएं व युवा लड़के व लड़कियां अगुवाई ले रहे हैं और नेताओं के रूप में सामने आ रहे हैं। औरतें अपने हुनर विकास के अलावा साझेदारी की ओर कदम बढ़ाकर निगरानी और सुरक्षा जांच में अपनी अहम भूमिकाएं अदा कर रही हैं। साक्ष्य और तथ्यों को पहचानने के अलावा उसका निरीक्षण, अवलोकन करने की क्षमता में महिलाओं का तीव्रता से विकास हो रहा है। महिलाओं ने रिश्ता बनाया है साझेदारी से काम करने के लिए और सफ़ाई कर्मचारियों के साथ आमने-सामने बात करके मुद्दों का हल निकालने के लिए। आज महिलाएं अपने हिसाब से बता रही हैं कि नाली या नाले की रुकावट की वजह क्या है, शौचालय का डिजाइन कैसा होना चाहिए? कौन सा मॉडल बेहतर है? कौन सी जगह है जो उसके लिए सुरक्षित है या नहीं? वे सुरक्षित माहौल को कायम रखने में उनकी अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में सोचती भी हैं और भागीदारी भी ले रही हैं। इन मुद्दे, चुनौतियां और उनसे निपटने के लिए सिर्फ़ बीज भर से काम नहीं हो पाएगा। कहीं ना कहीं ये एक सोच उभर कर आ रही है कि अभी तो पौधा बनेगा और पनपने के बाद पेड़ और फल के रूप में सामने आएगा जिसके लिए महिलाएं और युवा मुस्तैदी से लगे हुए हैं।

सरिता बलोनी *जागोरी की एक्शन रिसर्च टीम से जुड़ी हैं।*